

# डॉ. एंथोनी जे. टोमासिनो, द टेन कमांडमेंट्स, सत्र 3: आज्ञा 2 : कोई चित्र नहीं

यह डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो हैं, और दस आज्ञाओं पर उनकी शिक्षा। यह सत्र 3 है, आज्ञा 2: कोई छवि नहीं।

तो अब हम दूसरी आज्ञा को देखना शुरू करने जा रहे हैं।

तुम अपने लिए कोई खुदी हुई मूर्तियाँ नहीं बनाओगे। अब यह एक, कुछ मायनों में, काफी सीधा लग सकता है। दिलचस्प बात यह है कि चर्च के इतिहास में, यह संभवतः दस आज्ञाओं में से सबसे विवादास्पद रही है।

इसका एक कारण शब्दों का प्रयोग है। क्या यह आज्ञा दो है, या यह केवल आज्ञा 1बी है? और यह एक तरह से एक दिलचस्प सवाल खड़ा करता है। क्या हम यहाँ वास्तव में आज्ञा संख्या एक का विस्तार करने की बात कर रहे हैं, कि आपके पास कोई अन्य देवता नहीं होना चाहिए, जिसमें खुदी हुई मूर्तियाँ भी शामिल हैं, या यह एक अलग आज्ञा है जिसमें कहा गया है कि आपके पास मूर्तियाँ भी नहीं होनी चाहिए? यहूदियों, प्रोटेस्टेंट और रूढ़िवादी लोगों के बीच, यह संख्या दो है।

आपके पास कोई भी खुदी हुई मूर्ति नहीं होनी चाहिए। और इस आदेश को सभी छवियों के निषेध के रूप में समझा जाता है, न कि केवल मूर्तिपूजक देवताओं के। हालाँकि, कैथोलिक और लूथरन इससे असहमत होंगे।

उनका मानना है कि यह 1बी है, कि यह वास्तव में पहली आज्ञा का दूसरा भाग है। और इससे सभी तरह के सवाल उठते हैं क्योंकि इसका मतलब यह होगा कि यह भगवान की किसी भी तरह की छवियों पर प्रतिबंध नहीं लगाता है, बल्कि केवल मूर्तिपूजक देवताओं की छवियों पर प्रतिबंध लगाता है। तो यहीं से हम प्रतीकों और भगवान की तस्वीरें रखने या न रखने के बारे में सभी विवादों में पड़ जाते हैं।

क्या दस आज्ञाओं द्वारा वास्तव में इसका खंडन किया गया है? फिर रूढ़िवादिता के साथ प्रश्न हैं। पूरा प्रश्न उस विचार से जुड़ा है जिसे हम मूर्तिभंजक विवाद कहते हैं, जो बहुत पहले हुआ था, जहाँ चर्च इस सवाल पर विभाजित था कि क्या आपके पास प्रतीक हो सकते हैं या नहीं। और अंततः, ऐसा लगा कि उनमें से अधिकांश इस विचार पर सहमत हो गए कि आप ऐसा कर सकते हैं, लेकिन उन्होंने अलग-अलग तर्कों के साथ ऐसा किया।

तो, यह विशेष आज्ञा अपने तरीके से विवादास्पद रही है। इसलिए, यह अच्छा होगा यदि शब्द हमें भाषा के आधार पर यह निर्धारित करने में मदद कर सकें कि हमें इसे एक आज्ञा के रूप में देखना है या दो के रूप में। लेकिन दुर्भाग्य से, शब्द इसे पूरी तरह से स्पष्ट नहीं करते हैं।

तुम अपने लिए ऊपर आकाश में या नीचे पृथ्वी पर या नीचे के जल में किसी भी चीज़ के रूप में कोई मूर्ति नहीं बनाओगे। अब, यह अच्छा होगा यदि उन्होंने यहाँ कहा होता कि इसमें ईश्वर या

प्रभु की छवियाँ शामिल हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। तुम उनके सामने झुकना या उनकी पूजा नहीं करना, क्योंकि मैं, तुम्हारा परमेश्वर यहीवा, ईर्ष्यालु ईश्वर हूँ, जो मुझसे घृणा करने वालों के माता-पिता के पाप के लिए तीसरी और चौथी पीढ़ी तक के बच्चों को दण्ड देता हूँ, लेकिन जो मुझसे प्रेम करते हैं, उनकी हज़ार पीढ़ियों पर प्रेम करता हूँ।

ऐसा लगता है कि हम यहाँ मूर्तिपूजक देवताओं के बारे में बात कर रहे हैं। तो, फिर सवाल यह उठता है कि क्या हम केवल मूर्तिपूजक देवताओं के बारे में बात कर रहे हैं, या हम किसी भी छवि के बारे में बात कर रहे हैं? यहूदी परंपरा में, इसे स्पष्ट रूप से पहली आज्ञा से अलग आज्ञा के रूप में समझा गया था और इसमें किसी भी प्रकार की खुदी हुई छवियाँ शामिल थीं। वास्तव में, यहूदी इतिहास में कई बार, इसका बहुत ही सख्ती से अर्थ लगाया गया है कि किसी भी प्रकार की कोई प्रतिनिधित्वात्मक कला नहीं है।

और इस्लाम के कुछ हिस्से भी हैं जो इसे उसी तरह से व्याख्या करते हैं। और इसलिए, इस्लाम के कुछ हिस्सों में, उन्हें समान समझ के कारण कोई भी प्रतिनिधित्वात्मक कला रखने की अनुमति नहीं है। इसलिए, यहाँ इन छोटी चीज़ों को आँख की मूर्तियाँ कहा जाता है, जो यहाँ एक दिलचस्प तरह की साइडलाइन है।

लेकिन ये स्पष्ट रूप से प्रतिनिधित्वात्मक कला हैं, लेकिन यह एक बड़ा सवाल है कि वे क्या दर्शाते हैं। और ऐसा माना जाता था कि हमें कुछ सुमेरियन उत्खननों और अन्य जगहों पर इनमें से बहुत सारे मिले थे। और ऐसा माना जाता था कि ये देवताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

खैर, अब वे मानते हैं कि वे देवताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं, बल्कि वास्तव में उपासक हैं। और यह स्पष्ट रूप से था कि जब आप मंदिर में उपस्थित नहीं हो सकते थे, तो आप अपनी जगह पर इन छोटी मूर्तियों में से एक को रख देते थे। और मैं बस कल्पना कर रहा था, क्या यह दिलचस्प नहीं होगा कि कभी-कभी मंच पर कदम रखा जाए और मेरी मंडली में देखा जाए और वहाँ कार्डबोर्ड कटआउट का एक गुच्छा रखा हो।

मुझे मत देखो, मैं वास्तव में यहाँ हूँ। लेकिन हाँ, मुझे लगता है कि उन्हें अपने देवताओं की बुद्धिमत्ता पर बहुत अधिक भरोसा नहीं था। लेकिन किसी भी दर पर, जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो इसमें एक निश्चित प्रकार का तर्क है।

मेरा मतलब है, अगर भगवान पत्थर की मूर्ति में मौजूद हो सकते हैं, तो पूजा करने वाला भी पत्थर की मूर्ति में क्यों नहीं मौजूद हो सकता, है न? वैसे, तो मूर्ति से हमारा क्या मतलब है? मूर्ति क्या है? हम इन दिनों मूर्ति शब्द बहुत सुनते हैं, और हम शायद खेल नायकों, गायकों, या राजनीतिक हस्तियों के बारे में सोचते हैं जिन्हें लोग पूजते हैं या ऐसा कुछ। लेकिन अगर हम वास्तव में इस बारे में सोचते हैं कि यह सब कहाँ से आता है, तो हम जानते हैं कि मूर्ति वास्तव में किसी तरह के भगवान की छवि को संदर्भित करती है। यह सिर्फ एक प्रसिद्ध व्यक्ति या कुछ और नहीं है।

तो कम से कम सतही तौर पर तो ऐसा लगता है कि यह आज्ञा सीधी-सादी होगी। आप देवताओं की प्रतिमाएँ नहीं बनाते। और अगर यह इतना आसान होता, तो मैं वहीं रुक सकता था, और मुझे आगे जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

लेकिन यह उससे कहीं ज़्यादा गहरा है और इसमें सिर्फ़ यह निर्धारित करने से कहीं ज़्यादा चीज़ें शामिल हैं कि हम भगवान या इस मामले में मूर्ति से क्या मतलब रखते हैं। ठीक है, तो हम जानते हैं कि मूर्तियाँ सिर्फ़ मशहूर लोग नहीं हैं। जाहिर है, वे देवताओं को संदर्भित करते हैं।

वे पत्थर और चट्टान के टुकड़ों को संदर्भित करते हैं। प्राचीन दुनिया में मूर्तियाँ कई तरह के रूपों में आती थीं। और मध्य पूर्व में, सबसे आम रूपों में से एक आकृति, एक इंसान का रूप है।

जाहिर है, यह भगवान बाल है। और इस हाथ में बहुत संभावना है कि बिजली का बोल्ट हो। फिर हमारे पास मिस्र के देवताओं जैसी चीज़ें हैं, जिन्हें हम थेरियोमॉर्फिक कहते हैं, जिनके पास पशु रूप हैं।

मूर्तियाँ प्रतीकों का रूप भी ले सकती हैं, जैसे कि यहाँ एटन डिस्क का चित्रण, यहाँ ऊपर सूर्य डिस्क, जिसके सभी हाथ नीचे की ओर पहुँचे हुए हैं और लोगों को सभी प्रकार के अद्भुत आशीर्वाद दे रहे हैं। यहाँ, यह एक दिलचस्प संयोजन है। हम इसे स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते, मुझे यकीन है, लेकिन यहाँ हमारे पास एक सिंहासन पर बैठा हुआ भगवान है।

हम जानते हैं कि वह एक देवता है क्योंकि उसके पास सींग हैं। हमारे पास यहाँ दो प्रतीक हैं, जो सूर्य और शायद एक तारे, शायद इशतार या उस तरह के किसी प्रतीक के प्रतीक प्रतीत होते हैं। और यहाँ, हमारे पास एक वेदी है, जिस पर एक प्रतीक बैठा हुआ है।

और देवताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीकों का होना एक बहुत ही आम बात है। और एक सवाल यह है कि क्या यह भी एक मूर्ति है, या यह सिर्फ़ एक प्रतीक है? आप जानते हैं, जैसे कि ईसाई चर्चों में, बेशक, हमारे पास त्रिभुज होते हैं और कभी-कभी तीन वृत्त या इस तरह की कोई चीज़ होती है, जो ईश्वर का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रतीक होता है। और प्राचीन लोगों के लिए, अक्सर ये आपकी ज़्यादा आम मूर्तियों की जगह ले लेते थे।

और फिर उनमें से सबसे खुरदरा एक प्रकार का है, जो मासाबोट्स है, बस एक खड़ा हुआ पत्थर, किसी प्रकार का एक स्तंभ, या यहाँ तक कि एक चट्टान जिसे किसी ने खड़े होने का फैसला किया है और एक निवास स्थान या भगवान का प्रतीक कहा है। तो, देवताओं के विभिन्न भौतिक प्रतिनिधित्व के विभिन्न रूप हैं। लेकिन यहाँ थोड़ा आगे बढ़ते हुए, आप जानते हैं, स्पष्ट रूप से हमारे पास मानवरूपी है, हमारे पास, मुझे यहाँ जाने दो, थेरियोमॉर्फिक है, जिसके बारे में मैंने बात की है, हमारे पास प्रतीक हैं, और अंत में मासाबोट्स हैं।

पवित्र वृक्ष या पवित्र उपवन। यह एक दिलचस्प बात है क्योंकि, आप जानते हैं, यह एक तरह से अपनी खुद की मूर्ति बनाने जैसी चीज़ है। आप जानते हैं, एक पेड़ बड़ा हो गया है, और आप पेड़ को किसी तरह के भगवान का प्रतिनिधित्व करने के रूप में नामित करते हैं।

अशेराह से कैसे संबंधित हो सकता है, क्या वे किसी तरह से इन पवित्र ग्रीक विचारों से जुड़े हो सकते हैं। वास्तव में नहीं पता। लेकिन ध्यान में रखने वाली बात यह है कि मूर्तियाँ सिर्फ छवियाँ नहीं हैं, और एक बहुत ही वास्तविक अर्थ में यह माना जाता था कि वे उस देवता की आत्मा का प्रतीक हैं जिसका वे प्रतिनिधित्व करती हैं।

पुराने नियम में, भविष्यवक्ताओं में, कभी-कभी मूर्तिपूजा के व्यंग्य होते हैं, और उनमें शिल्पकार की इन प्रसिद्ध छवियों में से एक है जिसने अपनी मूर्ति बनाई है, और फिर वह लकड़ी का एक हिस्सा लेता है, और वह उसके सामने झुकता है और कहता है, ठीक है, वह लकड़ी का एक हिस्सा लेता है और वह अपनी चिमनी में फेंकता है और सिर हिलाता है, आह, मैं गर्म हूँ! अद्भुत! और लकड़ी का एक हिस्सा, वह उसके सामने झुकता है, और वह कहता है, ओह, आप मेरे भगवान हैं! इतना आसान नहीं है, लेकिन, आप जानते हैं, यह निश्चित रूप से बाहर से ऐसा लगता है, लेकिन आम तौर पर उन्हें एक छवि को भगवान का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक बहुत ही विस्तृत अनुष्ठान से गुजरना पड़ता था, और एक अर्थ में, भगवान की उपस्थिति का एक हिस्सा छवि के भीतर रहता था। आम तौर पर, एक अनुष्ठान होता था जिसे मुंह की सफाई कहा जाता था, और फिर मुंह खोला जाता था, और फिर विभिन्न बलिदान और प्रार्थनाएँ की जाती थीं, ये सब उस भगवान के बीच संबंध बनाने के लिए डिज़ाइन किए गए थे जो कहीं बाहर है और यह छवि जो यहाँ कहीं बैठी है। और हम इसकी तुलना एक तरह से, शायद किसी प्रतीक के पवित्रीकरण से कर सकते हैं, हालाँकि वे शायद हमारे दिनों की तुलना में इसमें थोड़ा अधिक शामिल थे।

लेकिन नहीं, उन्होंने स्पष्ट रूप से एक व्यक्ति की मूर्ति और भगवान का प्रतिनिधित्व करने वाली मूर्ति के बीच अंतर किया, और यह केवल कलात्मक अंतर का सवाल नहीं था। यह अनुष्ठानों, प्रक्रियाओं का सवाल था। अनुष्ठानों से पहले, यह एक मूर्ति है, और अनुष्ठानों के प्रदर्शन के बाद, इसे वास्तव में भगवान कहा जा सकता है।

इसलिए उनके बीच स्पष्ट अंतर था। प्राचीन दुनिया में हर किसी के पास अपनी मूर्तियाँ थीं, किसी न किसी तरह की। यहाँ असीरियन योद्धाओं द्वारा विभिन्न स्थानों से प्राप्त मूर्तियों को ले जाने का एक अद्भुत चित्रण है।

कभी-कभी आपको ऐसी मूर्तियों की तस्वीरें मिलती हैं, जिन पर जंजीरें बंधी होती हैं, जैसे कि उन्होंने खुद देवताओं को बांध रखा हो। लेकिन सभी अलग-अलग लोगों, सभी अलग-अलग देशों में, सभी की अपनी-अपनी मूर्तियाँ होती हैं, और अक्सर युद्ध के समय इन्हें हटा दिया जाता था और न केवल लोगों को वश में करने के तरीके के रूप में, बल्कि उनके देवताओं को भी वश में करने के तरीके के रूप में मंदिरों या अन्य चीजों में विभिन्न स्थानों पर रख दिया जाता था। मूर्तियाँ इतनी आम थीं कि जब सिकंदर महान के समय में यूनानियों का पहली बार यहूदियों से सामना हुआ, तो वे इस तथ्य से चकित थे कि यहूदियों के पास कोई छवि नहीं थी।

वास्तव में, यहूदियों के बारे में शुरुआती ग्रीक वर्णनों में से एक ने उन्हें नास्तिकों का राष्ट्र बताया, नास्तिक इसलिए क्योंकि उन्होंने कोई ईश्वर नहीं देखा। आपके पास कोई मूर्ति नहीं है, आपके पास कोई ईश्वर नहीं है, जाहिर है। अब, बाइबिल ने ईश्वर की छवियों पर प्रतिबंध नहीं लगाया है, और मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण अंतर है क्योंकि जब आप ईश्वर के बारे में सोचते हैं,

जैसा कि हम सभी करते हैं, मुझे उम्मीद है, हम बहुत ही, मुझे लगता है, अर्थ-उन्मुख शब्दावली में सोचते हैं जैसा कि हमें करना चाहिए।

हम ऐसे प्राणी हैं जो अपनी पाँच इंद्रियों से बंधे हैं, और हम उन चीज़ों के बारे में सोचते हैं जो हम देखते हैं, सुनते हैं, सूँघते हैं, और इसी तरह की अन्य चीज़ों के बारे में, लेकिन किसी भी चीज़ से ज़्यादा हमारी दृष्टि के बारे में। और इसलिए हमारे पास अक्सर ऐसी छवियाँ होती हैं जिनका उपयोग हम ईश्वर से जुड़ने के लिए करते हैं। कुछ लोगों के लिए, यह लंबे सफ़ेद बालों वाला बूढ़ा आदमी या प्यारे दिखने वाले यीशु या ऐसी ही कोई चीज़ होती है, और मैंने कुछ लोगों से बात की है जो कहते हैं, ठीक है, जब वे प्रार्थना करते हैं, तो वे बस प्रकाश की एक बड़ी गेंद या उस तरह की किसी चीज़ की कल्पना करते हैं।

किसी भी मामले में, आप हमेशा किसी न किसी तरह की छवि के बारे में बात कर रहे हैं, और यह गलत नहीं है। बाइबल खुद भगवान का वर्णन करने के लिए कई अलग-अलग छवियों का उपयोग करती है। तो, आप जानते हैं, हमारे पास भगवान की यह छवि है कि वह अपनी उंगली से नीचे पहुँचते हैं और दस आज्ञाएँ लिखते हैं और मूसा से कहते हैं कि जब वह उनके पास से गुज़रेगा तो भगवान उसे अपनी पीठ दिखाने देंगे।

हमारे पास पति की छवि है जिसका इस्तेमाल पुराने नियम में अक्सर किया जाता है। परमेश्वर पहाड़ है, चट्टान है। उनकी चट्टान हमारी चट्टान जैसी नहीं है।

यह स्पष्ट रूप से एक छवि है जिसे परमेश्वर के कुछ गुणों को मूर्त रूप देने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिनसे हमें संबंधित होने में सक्षम होना चाहिए। पुराने नियम में दो या तीन स्थानों पर माँ के रूप में परमेश्वर की छवियाँ हैं। पुराने नियम में इसका आम तौर पर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह वहाँ दिखाई देता है।

ईश्वर एक किला है। पुराने नियम की सबसे आम छवि यह है कि ईश्वर राजा है। अब, यह निश्चित रूप से वह छवि है जो बहुत से भविष्यवाणियों और अन्य ग्रंथों में सबसे प्रमुख है।

और जैसा कि हमने चर्चा की है, परमेश्वर और इस्राएल के बीच के रिश्ते को अक्सर ऐसे तरीके से दर्शाया जाता है जो एक संप्रभु के अपने जागीरदारों से संबंध के समान होता है। परमेश्वर, महान राजा। और मलाकी में, आप जानते हैं, अगर मैं राजा हूँ, तो मेरा सम्मान कहाँ है? हमारे पास परमेश्वर का वह सब चित्रण है जिससे हम जुड़ सकते हैं।

इसलिए, बाइबल यह नहीं कहती कि आपके पास कोई मूर्ति नहीं होनी चाहिए। बल्कि, यह कहती है कि आपके पास कोई खुदी हुई मूर्ति नहीं होनी चाहिए, कोई भी ऐसी मूर्ति नहीं होनी चाहिए जो पत्थर में जड़ी हुई हो, हम कह सकते हैं। हाल के वर्षों में यह जांच का एक बड़ा क्षेत्र बन गया है, जिसे हम आइकॉनिज्म कहते हैं।

और यह एक बार फिर से असीरियन रिलीफ है। इसका इस्तेमाल आइकॉनिज्म के विषय पर एक किताब के कवर में किया गया है। आइकॉनिज्म का क्या मतलब है? खैर, एक, एक आइकन की छवि होना।

तो, आइकॉनिज्म का मतलब है कोई छवि नहीं। यह बिल्कुल उचित नहीं है, क्योंकि यह अभी भी एक छवि है। लेकिन यह स्पष्ट है, यह भगवान की आपकी सामान्य छवि नहीं है, है न? यह सिंहासन पर बैठा कोई बड़ी दाढ़ी वाला आदमी नहीं है।

यह किसी ऐसे व्यक्ति का चित्र नहीं है जिसके सिर के ऊपर से सींग निकल रहे हों। हो सकता है, या हम वास्तव में निश्चित नहीं हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि यह एक कलम या उस तरह की कोई चीज़ हो सकती है, शायद किसी शास्त्रज्ञ भगवान या उस तरह की किसी चीज़ के प्रतीक के रूप में संदर्भित हो, आप जानते हैं? तो, एक प्रतीकवाद का मतलब बस पूजा में छवियों के उपयोग को अस्वीकार करना है। और यह, ज़ाहिर है, कुछ ऐसा रहा है जो न केवल यहूदी धर्म में, बल्कि ईसाई धर्म में भी विवादास्पद रहा है।

हरोमाज़्दा का प्रतिनिधित्व करने के लिए पंखों वाली सूर्य डिस्क या उस तरह की कोई तस्वीर होती है।

हालाँकि, कभी-कभी इसके ऊपर एक तरह के आदमी की आकृति भी होती है। लेकिन यह दोनों तरह से किया जाता है। लेकिन किसी भी प्राचीन लोगों ने प्रतीकात्मक चित्रण का प्रतिनिधित्व या अस्वीकार नहीं किया।

हर किसी के पास किसी न किसी तरह की मूर्तियाँ थीं। इसलिए, यह निश्चित रूप से इस मायने में इज़राइल को अद्वितीय बनाता है। इस अर्थ में नहीं कि उनके पास कोई मूर्तियाँ नहीं थीं, क्योंकि उनके पास थीं, लेकिन आमतौर पर उनकी मूर्तियाँ प्रभु की नहीं थीं, या कम से कम जहाँ तक हम बता सकते हैं, वे नहीं थीं।

तो, अब इस आज्ञा की ओर बढ़ते हुए, इसे थोड़ा और विस्तार से देखते हुए, जब मूसा दस आज्ञाएँ दे रहा था, तो उल्लेखनीय रूप से, विडंबना यह है कि, इस्राएल पहले से ही यह माँग करने की प्रक्रिया में था कि उनके पास एक मूर्ति हो। इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें एक छवि दी थी। उसने उन्हें आग के एक खंभे के द्वारा आगे बढ़ाया।

वह उन्हें बादल के एक खंभे के सहारे ले गया। वे ऐसी छवियाँ थीं जिनसे लोग जुड़ सकते थे। मूसा पहाड़ पर चढ़ता है।

लोगों को नहीं पता कि वह वहाँ क्या कर रहा है। वह कहाँ गया? वह इतने लंबे समय से गायब है। और इसलिए, लोग हारून के पास आते हैं और कहते हैं, हमें एक ईश्वर दे दो।

हमें एक ऐसा ईश्वर दीजिए जिसे हम देख सकें, जो हमें मिस्र वापस ले जा सके। और इसलिए, हाँ, वे पहले से ही इस दूसरी आज्ञा को तोड़ने की प्रक्रिया में हैं। यह वैचारिक मुद्दा लगातार बना हुआ है, और यह पूरे इज़राइल के इतिहास में जारी है।

अन्य देवताओं और बुतपरस्त देवताओं की तरह इस पर जोर नहीं दिया गया है, और फिर भी, यह निश्चित रूप से चिंता का विषय है, खासकर बाद के कुछ भविष्यवक्ताओं के लिए। यहाँ तक

कि 30 साल पहले, जब मैंने पहली बार दस आज्ञाओं को लिखना और शोध करना शुरू किया था, तो मैं कह सकता था कि ऐसी कोई मूर्ति नहीं मिली थी जिसे निश्चित रूप से भगवान की छवि कहा जा सके। मैं अब उतने निश्चितता के साथ ऐसा नहीं कह सकता, क्योंकि ऐसा लगता है कि ऐसी संभावना है कि ऐसी छवियां मौजूद हों।

पुरातत्वविदों को यरूशलेम के आस-पास खुदाई करके कुछ दिलचस्प तस्वीरें मिली हैं जो स्पष्ट रूप से ईश्वरीय छवियां हैं, लेकिन उन्हें भगवान माना जाता है या नहीं, या क्या इनमें से कुछ मूर्तिपूजक देवता हैं जिनकी इस्राएली पूजा करते हैं, यह हमारे दृष्टिकोण से निर्धारित करना हमारे लिए कठिन है। हाल ही में की गई कुछ खुदाई में कुछ बहुत ही विचारोत्तेजक निष्कर्ष और कलाकृतियाँ मिली हैं। मूर्तिपूजा वास्तव में दूसरे मंदिर काल तक एक निरंतर समस्या बनी रही, 515 के बाद का समय, जब उन्होंने मंदिर का पुनर्निर्माण किया।

यहाँ कुछ मूर्तियाँ दी गई हैं जो यरूशलेम या यहूदा के कुछ अन्य यहूदी शहरों में पाई गई हैं। सेखमेट मूर्तियाँ। बेज।

बेज़ जाहिर तौर पर एक बहुत लोकप्रिय देवता थे। वे बच्चे पैदा करने के संरक्षक थे, और वे वास्तव में एक छोटे से बौने किस्म के व्यक्ति थे। वे एक मिस्र के देवता थे, लेकिन बेज़ की बहुत सारी छवियाँ पाई गई हैं।

होरस की आँख। मेरा मानना है कि यह मेगिदो से है। यह मेगिदो के हाथीदांतों में से एक जैसा दिखता है, लेकिन यह भी एक मिस्र का प्रतीक था जो भगवान होरस का प्रतिनिधित्व करता है, जो भगवान का प्रतीक है।

अन्ना, माँ देवी। किसी न किसी तरह की विभिन्न देवियों की प्रजनन मूर्तियाँ। यह बाल सेठ स्कारब है, जिसमें एक जानवर और उसकी पीठ पर खड़े एक देवता की छवि है, और संभवतः एक आकृति जो उसके सामने घुटने टेक रही है।

हमें यरूशलेम में कई स्कारब भी मिले हैं। बेशक, स्कारब भी एक मिस्र का प्रतीक है जो अनंत जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। इन पर कई मिस्र के प्रतीक और अन्य चीजें अंकित हैं।

यह उन दिनों की बात है जब इस्राएल के मिस्र के साथ बहुत करीबी संबंध थे, और परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में उन संबंधों को हतोत्साहित किया था। एक तरह से, आप इस्राएल और यहूदा के राजाओं और मिस्र के राजाओं के बीच बार-बार ये उलझने देखते हैं। वे मिस्रियों से उम्मीद कर रहे थे कि वे उनकी मदद करेंगे और उन्हें सहायता देंगे, खासकर अशशूर के खिलाफ उनके संघर्ष में।

मिस्र कभी सफल नहीं हुआ। लेकिन किसी कारण से, आशा हमेशा बनी रहती है। बेशक, इन दूसरे राज्यों के साथ अपने रिश्ते को बेहतर बनाने का एक तरीका यह है कि आप अपने पड़ोसियों के देवताओं का सम्मान करें।

यह बहुत संभव है कि यहाँ पाए जाने वाले बहुत से प्रतीक किसी तरह के राजनीतिक गठबंधन का प्रतिनिधित्व करते हों। यह शायद सबसे ज़्यादा परेशान करने वाली छवियों में से एक है। हिजकिय्याह की मुहर।

यह 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व की है और ऐसा लगता है कि यह राजा हिजकिय्याह की है। फिर भी यहाँ हम देख सकते हैं कि हमारे पास जीवन का मिस्री प्रतीक अंख है। इस पर पंखों वाला सूर्य चक्र है।

बेशक, सवाल यह है कि यह पंख वाली सूर्य डिस्क किसका प्रतिनिधित्व करती है? क्या इसे भगवान का प्रतिनिधित्व माना जाता है? हम वास्तव में नहीं कह सकते। बाइबिल के अनुसार हिजकिय्याह एक अच्छा राजा था। फिर भी यहाँ ऐसा लगता है कि उसके शासनकाल के दौरान इस्तेमाल की जाने वाली मुहरें दूसरी आज्ञा का उल्लंघन करती हैं।

थोड़ा और आगे बढ़ते हुए, हमारे पास कुछ ऐसा है जिसे हम शालेमाइट सील कहते हैं, जिसमें फिर से दो उपासक हैं। यह फिर से इज़राइल से है, और हमारे पास यहाँ हिब्रू है, हिब्रू पाठ शालेमाइट से पहचान करता है। यहाँ हमारे पास दो लोग हैं जो पूजा कर रहे हैं, और फिर यहाँ ऊपर, जाहिर तौर पर चंद्रमा डिस्क है।

यह स्पष्ट रूप से एक वेदी है। तो, एक इज़रायली मुहर जिस पर एक बुतपरस्त चंद्र देवता के साथ एक हिब्रू शिलालेख है। यहाँ इज़रायल की एक और मुहर है, जो 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व की लगती है।

यह एक ऐसी चीज़ को दर्शाता है जिसे हम मसू कहते हैं, जो किसी तरह की सुरक्षात्मक भावना है। तो ऐसा लगता है कि इस्राएल निश्चित रूप से मूर्तिपूजा में लिप्त था, अपने पड़ोसियों के देवताओं की छवियों की पूजा करता था। क्या वे भगवान के चित्रण में लगे थे? निश्चित रूप से कम, शायद बिल्कुल नहीं, लेकिन हम यह नहीं कह सकते कि उन्होंने ऐसा बिल्कुल नहीं किया।

लेकिन हम यह कह सकते हैं कि पुराने नियम के पूरे काल में इस्राएल में मूर्तिपूजा की समस्या निश्चित रूप से बनी हुई थी। तो फिर प्रभु की छवियों पर प्रतिबंध क्यों लगाया गया? यदि परमेश्वर अपने लोगों को उपयोग करने, उनसे संबंध बनाने के लिए छवियाँ देता है, तो इस्राएलियों के लिए इन छवियों को पत्थर या मिट्टी के टुकड़ों में बदलना या दीवार पर शिलालेख बनाना इतना बुरा क्यों था? ऐसा क्यों इतना बुरा है? बाइबल वास्तव में कभी स्पष्ट रूप से नहीं बताती है कि ऐसा क्यों है, लेकिन पुराने नियम और नए नियम में ऐसे कई अंश हैं जो हमें इस बारे में कुछ तर्क देते हैं कि इस्राएलियों को मूर्तियाँ क्यों नहीं रखनी चाहिए। और हम यहाँ केवल मूर्तिपूजाक देवताओं की मूर्तियों के बारे में ही बात नहीं कर रहे हैं।

मेरा मतलब है, जाहिर है, कोई भी मूर्तिपूजाक देवता पहली आज्ञा के द्वारा निषिद्ध है। प्रभु के लिए कोई मूर्ति क्यों नहीं? मुझे लगता है कि सबसे पहले सिद्धांतों में से एक जो हम इंगित कर सकते हैं वह यह तथ्य है कि कोई भी मूर्ति, कोई भी पत्थर की मूर्ति, प्रभु के साथ न्याय नहीं कर सकती। हमारे पास 1 राजा में यह अद्भुत कथन है, लेकिन क्या परमेश्वर वास्तव में पृथ्वी पर निवास

करेगा? देखो, स्वर्ग और सबसे ऊँचा स्वर्ग तुम्हें समाहित नहीं कर सकता, फिर यह भवन जो मैंने बनाया है, उसमें तो और भी क्या समा सकता है।

यहाँ, सुलैमान मंदिर को समर्पित कर रहा है, और सुलैमान यह स्वीकार करता है कि उसका मंदिर परमेश्वर की उपस्थिति को धारण नहीं कर सकता। मूर्तिपूजा के पीछे जो पूरी समझ थी, वह यह विचार था कि परमेश्वर किसी अर्थ में इस चट्टान के टुकड़े में निवास करने जा रहा था। और यहाँ राजा सुलैमान कह रहा है, नहीं, यह विशाल भवन भी तुम्हें धारण नहीं कर सकता क्योंकि स्वर्ग भी तुम्हें धारण नहीं कर सकता।

तो इस आधार पर, भगवान को धारण करने के लिए एक मूर्ति बनाने का विचार बकवास प्रतीत होगा। यशायाह अध्याय 66, स्वर्ग मेरा सिंहासन है और पृथ्वी मेरे पैरों के लिए एक चौकी है। वह घर कहाँ है जो तुम मेरे लिए बनाओगे? मेरा विश्राम स्थान कहाँ होगा? ये सब चीज़ें मेरे हाथ ने बनाई हैं, और साथ ही ये सारी बातें यहोवा ने बताई थीं।

एक बार फिर, यह विचार कि कोई ऐसी जगह हो सकती है जहाँ ईश्वर निवास कर सकता है और भौतिक संरचनाओं द्वारा सीमित हो सकता है, यहाँ अस्वीकार कर दिया गया है। ईश्वर बहुत बड़ा है, बहुत ज़्यादा है। सीधे शब्दों में कहें तो, मूर्तियाँ ईश्वर के बारे में हमारी दृष्टि को सीमित कर देंगी।

बिल्लियाँ बक्सों में समा जाती हैं। भगवान किसी बक्से में नहीं समाते। और भगवान को उस तरह से बांधा नहीं जा सकता।

तो एक भावना यह है कि ये सभी छवियाँ, कुछ हद तक, सीमित करने वाली हैं। और आप इसके बारे में सोचते हैं, और आप उस तरीके के बारे में सोचते हैं जिस तरह से हम ईश्वर की कल्पना करने की कोशिश करते हैं। जब तक हम उन छवियों को शिथिल रूप से पकड़ते हैं, हम समायोजित कर सकते हैं।

लेकिन एक बार जब वे चीज़ें पत्थर पर जड़ दी जाती हैं या दीवार पर पेंट कर दी जाती हैं, तो यह खतरा पैदा हो जाता है कि वे हमें सीमित कर सकती हैं। मुझे कई साल पहले की एक कहानी याद है जिसमें एक बच्चे ने यीशु की तस्वीर को भगवान समझ लिया था। नहीं, वह भगवान नहीं हो सकता क्योंकि भगवान के बाल लंबे हैं।

ये ऐसी सीमाएँ हैं जो प्रतिमाएँ हम पर लगाएँगी यदि हम उन्हें पत्थर में जड़ने दें। तो यह निश्चित रूप से समस्याओं में से एक है, वे सीमाएँ जो मूर्तियाँ ईश्वर पर लगाएँगी। दूसरी समस्या यह है कि मूर्तियों के साथ छेड़छाड़ की जा सकती है।

और यह पुराने नियम से बहुत स्पष्ट है। यह मूर्तियों के खिलाफ़ भविष्यवक्ताओं की प्रमुख आलोचना का हिस्सा है: तथ्य यह है कि आप मूल रूप से मूर्ति से वह सब करवा सकते हैं जो आप चाहते हैं। प्राचीन दुनिया में, मूर्तियों को उनके मंदिरों से हटा दिया जाता था, खासकर साल के कुछ खास त्योहारों पर।

उन्हें शहर में लाया जाता था। एक त्यौहार में, देवताओं के बीच एक छोटा सा नकली युद्ध होता था, और फिर देवता को विजयी होकर उनके मंदिर में वापस लाया जाता था। आप अक्सर सोचते हैं कि अगर कोई टूटी हुई मूर्ति को गिरा दे तो क्या होगा।

इससे आपका धर्मशास्त्र पूरी तरह से बिगड़ जाएगा, है न? मूर्तियों से वह करवाया जा सकता है जो हम उनसे करवाना चाहते हैं। और इसलिए लोग जाकर उस मूर्ति के गले में तरल रक्त या कुछ और डाल देते हैं जिसे उन्होंने बनाया है, और भगवान उसे थूकते नहीं हैं। आह, भगवान ने मेरा उपहार स्वीकार कर लिया है।

आप मूर्तियों के चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान बना सकते हैं और सोच सकते हैं कि वे आपसे हमेशा खुश हैं। मूर्तियों को वह करने के लिए बनाया जा सकता है जो आप उनसे करवाना चाहते हैं, जिस तरह से आप चाहते हैं कि वे काम करें। बेशक, भगवान को हेरफेर नहीं किया जाना चाहिए।

और यह, बेशक, मूर्तिपूजा की सबसे प्रसिद्ध घटना, सोने के बछड़े की पूरी बात के पीछे की बड़ी छवियों में से एक है। यहाँ भगवान के साथ छेड़छाड़ की भावना है क्योंकि वे सोने का बछड़ा क्यों बनाते हैं और कहते हैं कि हमें सोने का बछड़ा चाहिए जो हमें वापस मिस्र ले जाए? खैर, मिस्र में बछड़ों की पूजा की जाती थी। यह उनके देवताओं में से एक, हथोर का रूप था।

तो यहाँ इस्राएली वापस मार्च करते हुए आते हैं, और कहते हैं, देखो, हमारे पास मिस्र का एक सुनहरा देवता है। और सोचते हैं कि मिस्रियों के साथ उनकी पहचान के कारण उनका मिस्र में वापस स्वागत किया जाएगा। यह निश्चित रूप से ईश्वर के साथ छल है।

और वह उनके आगे जा रहा है, जिसका मतलब है कि वह निश्चित रूप से उन्हें और उनके कामों को मंजूरी देता है। एक और समस्या। मूर्तियाँ मानवीय पूर्वाग्रहों का प्रतीक हैं।

और जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह बहुत उल्लेखनीय है। आप जानते हैं, बाइबल कभी यह नहीं बताती कि मूर्तियाँ गलत क्यों हैं। सेंट पॉल ने न्यू टेस्टामेंट में इसके बारे में बात की है।

वह जिस चीज़ के बारे में बात करते हैं, वह यह है कि मूर्तिपूजा कुछ सुंदर कलाकृतियों को प्रेरित कर सकती है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह मूर्तिपूजा को सुंदर बनाती है। अगर आप ग्रीक देवताओं की इन छवियों को देखें, तो वे मोटे नहीं हैं। वे गंजे नहीं हैं।

वे खूबसूरत हैं। वे प्यारे हैं। वे उन आदर्शों को मूर्त रूप देते हैं जो लोग अपने लिए रखते हैं।

और हम अक्सर ऐसी ही मानसिकता देखते हैं, आज की हमारी कला में भी, जब लोग यीशु को चित्रित करते हैं। और लोगों में, निश्चित रूप से, यीशु पर चिंतन करने, खुद को आदर्श बनाने की अद्भुत प्रवृत्ति होती है। यह आपको अल्बर्ट श्वित्ज़र के उस कथन की याद दिलाता है जब उन्होंने कहा था कि जो व्यक्ति ऐतिहासिक यीशु की तलाश में जाता है, वह किसी ऐसे व्यक्ति की तरह है जो गहरे कुएं में देखता है और जो वह अपनी ओर देखता है, वह उसका अपना प्रतिबिंब होता है।

यह वह तरीका है जिससे लोग अक्सर ईश्वर की छवि के बारे में सोचते हैं, यानी वे ईश्वर पर अपने विचार, अपने मूल्य थोपना चाहते हैं। ईश्वर श्वेत है या काला? नहीं, आपको चुनना होगा। अगर आप ईश्वर की ठोस छवि बनाना चाहते हैं, तो आपको चुनना होगा।

क्या ईश्वर शक्तिशाली है? क्या वह शक्तिशाली है? क्या वह कलात्मक है? क्या वह पुरुष है? क्या वह स्त्री है? वह? स्त्री? किसी भी हालत में, आपको चुनना होगा। और प्रत्येक मामले में, आप ईश्वर को किसी ऐसे मूल्य या किसी छवि में मूर्त रूप देने का चुनाव कर रहे हैं जिसे आप मूल्यवान मानते हैं। आपको थोर से प्यार करना होगा, है न? थोर उस भावना का प्रतीक है जिसे वाइकिंग्स ने सबसे अधिक महत्व दिया होगा।

मूर्तियाँ हमारे मूल्यों का प्रतीक होंगी। दूसरी ओर, ईश्वर चाहता है कि उसके लोग उसके मूल्यों का प्रतीक बनें। और इसीलिए आप ईश्वर की अपनी छवि को पत्थर में नहीं स्थापित कर सकते।

तो चलिए फिर से इतिहास के बारे में थोड़ी बात करते हैं। मूर्तियों का क्या हुआ? मूर्तियों का पतन। राजा योशियाह ने 640 से 609 ईसा पूर्व में इसराइल में मूर्तियों पर प्रतिबंध लगा दिया था।

लेकिन दुर्भाग्य से, वह युवावस्था में ही मर गया, और उसके सुधार उसके बाद भी जीवित नहीं रहे। उसका बेटा मनश्शे अपनी मूर्तिपूजा के लिए कुख्यात था। और इसलिए, यिर्मयाह अध्याय 2 आयत 26 से 27 के अनुसार, जैसे चोर पकड़े जाने पर लज्जित होता है, वैसे ही इस्राएल का घराना भी लज्जित होगा।

वे, उनके राजा, उनके अधिकारी, उनके पुजारी, उनके भविष्यद्वक्ता, जो एक पेड़ से कहते हैं, तुम मेरे पिता हो, और एक पत्थर से, तुमने मुझे जन्म दिया। स्पष्ट रूप से, यिर्मयाह उस स्थिति का चित्रण कर रहा है जो वह अपने आस-पास घटित होते हुए देखता है, कि लकड़ी की मूर्तियाँ और पत्थर की मूर्तियाँ इस्राएल में प्रभु के प्रतिनिधि बन गई हैं। इसलिए हम यहाँ केवल मूर्तिपूजक देवताओं के बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

हम प्रभु की छवियों के बारे में बात कर रहे हैं। और फिर, इसीलिए मैं वापस जाता हूँ और कहता हूँ कि मेरा मानना है कि दूसरी आज्ञा केवल मूर्तिपूजक छवियों के बारे में बात नहीं कर रही है, बल्कि प्रभु की छवियों के बारे में बात कर रही है, क्योंकि वे इसी की निंदा कर रहे हैं। यहजेकेल 6 और 8 के अनुसार, मूर्तिपूजा ने यरूशलेम के विनाश को भड़काया। और यहजेकेल उन सभी घृणित छवियों के बारे में बात करता है जिनकी लोग यरूशलेम के मंदिर में पूजा कर रहे थे।

अब, जब हम दूसरे मंदिर काल में आते हैं, 515 ईसा पूर्व के बाद मंदिर के पुनर्निर्माण के बाद, जैसा कि मैंने पिछली बार उल्लेख किया था, हमें शायद प्रवासी समुदायों के बीच मूर्तिपूजा के लिए कुछ प्रलोभन था। लेकिन वास्तव में यहूदा में मूर्तिपूजा की समस्या नहीं थी, एक बार फिर, लगभग 170 ईसा पूर्व में हेलेनिस्टिक सुधार शुरू होने तक, जब कुछ लोगों ने सोचा कि उनके लिए यरूशलेम के मंदिर में उजाड़ने वाली घृणित वस्तु स्थापित करना राजनीतिक रूप से सुविधाजनक होगा। इसलिए यह उल्लेखनीय है कि जिस भयावहता के साथ डैनियल की पुस्तक मैकाबीज़ की पुस्तक में उस घटना के बारे में बात करती है, वह यह है कि वे देख सकते थे कि

यह उस समय तक उनके अनुभव के लिए इतना विदेशी था, कि उस समय, इज़राइल में कोई मूर्तियाँ, कोई चित्र नहीं थे।

अब, हम दूसरे मंदिर काल के दौरान यहूदी धर्म में बदलाव देखते हैं। यीशु के समय तक, इस दूसरी आज्ञा के बारे में एक तरह की सनक पैदा हो गई थी, इस हद तक कि सामान्य रूप से प्रतिनिधित्वात्मक कला को अस्वीकार कर दिया गया था। मेनोराह कला में एक आम रूपांकन था, लेकिन इस अवधि के दौरान, मानव चित्रण बिल्कुल भी नहीं थे।

इस चित्रण के दौरान, यरूशलेम में एक चील को लेकर दंगा हुआ जिसे रोमनों ने मंदिर के सामने रखने की कोशिश की थी, और लोगों ने इसे गिराने की मांग की। एक और दंगा तब हुआ जब कुछ रोमन सैनिक अपने झंडे के साथ यरूशलेम में घुसे, जिन पर उनके विभिन्न संरक्षक जानवरों के चित्र थे। जब हेरोदेस द ग्रेट ने अपना मंदिर बनवाया, तो उसने बहुत सावधानी बरती कि कोई भी चित्रण कला शामिल न हो, क्योंकि उस समय जानवरों या मनुष्यों को दर्शाने वाली कोई भी चीज़ दूसरी आज्ञा का उल्लंघन मानी जाती थी।

इस तरह का रवैया थोड़ा कम और ज़्यादा होता रहा क्योंकि कुछ सौ साल बाद, उन्होंने एक बार फिर से प्रतिनिधित्वात्मक कला को अपनाया, और हमारे पास चौथी शताब्दी ईस्वी के आराधनालयों में पाए गए कुछ ऐसे अद्भुत मोज़ाइक हैं, जो राशि चक्र और इसी तरह की अन्य आकृतियों को दर्शाते हैं। इसलिए, समय के साथ दृष्टिकोण बदल गए। इसलिए, ज्यामितीय पैटर्न, पौधे के रूपांकनों, और फिर से, मेनोराह और डेविड का सितारा, वे सामान्य प्रतीक बन गए जिनका उपयोग कला में किया गया, लेकिन लोगों की किसी भी तरह की तस्वीर नहीं, यहां तक कि जानवरों की किसी भी तरह की छवि नहीं।

इस बिंदु पर आप सोच सकते हैं, क्या यहाँ दूसरी आज्ञा के उद्देश्य के बारे में कोई बुनियादी गलतफहमी है? दूसरी आज्ञा उन्हें देवताओं, मूर्तियों की छवियाँ बनाने से रोकने के लिए बनाई गई थी, और फिर भी यहाँ, वे किसी भी तरह की छवि को अस्वीकार कर रहे हैं। और मुझे लगता है कि आप, आप जानते हैं, यदि आप शब्दों को शाब्दिक रूप से पढ़ना चाहते हैं, तो आपको अपने लिए कोई भी नक्काशीदार छवि नहीं बनानी चाहिए, न ही ऊपर स्वर्ग में, न ही नीचे पृथ्वी पर, या किसी भी जानवर आदि की। यदि आप उन शब्दों को शाब्दिक रूप से पढ़ना चाहते हैं, तो निश्चित रूप से, आप कह सकते हैं कि आपको किसी भी जानवर की कोई भी छवि रखने की अनुमति नहीं है, भले ही आप उनकी पूजा न कर रहे हों।

लेकिन मुझे लगता है कि निहितार्थ बिल्कुल स्पष्ट है कि हम मूर्तियों, पूजा की छवियों के बारे में बात कर रहे हैं। इसलिए, मुझे ऐसा लगता है कि इस अवधि के दौरान, वे दूसरे आदेश के अपने पालन के बारे में थोड़ा सा, मान लीजिए, पांडित्यपूर्ण हो रहे हैं। खैर, चर्च के बारे में क्या? यह पूरी तरह से एक अलग मामला है, है ना? क्योंकि चर्च में, छवि, प्रतीकों का सवाल, और पूजा में छवियों का उपयोग एक बड़ा विवाद बन गया है।

और यीशु ने कभी दूसरी आज्ञा का जिक्र नहीं किया। पॉल ने इसके बारे में बात की, लेकिन वह स्पष्ट रूप से मूर्तिपूजक देवताओं की छवियों के बारे में बात कर रहा था। और जाहिर है कि 1 यूहन्ना की पुस्तक में भी यही बात कही गई है, जहाँ हमें मूर्तियों से दूर रहने के लिए कहा गया है।

लेकिन मूर्तियाँ चर्च में आईं, लगभग, यहाँ हम जाते हैं, छोटे बच्चों, मूर्तियों से खुद को दूर रखो, हाँ। और रोमियों में, बुद्धिमान होने का दावा करते हुए, वे मूर्ख बन गए और उन्होंने अमर ईश्वर की महिमा को नश्वर मनुष्य और पक्षियों और जानवरों और रेंगने वाले जीवों जैसी छवियों के लिए बदल दिया। यह स्पष्ट रूप से न केवल रोमन देवताओं के बारे में बात कर रहा है, जो मानव के आकार के थे, बल्कि मिस्र के देवताओं के बारे में भी।

लेकिन चर्च में, हम देख सकते हैं कि तीसरी शताब्दी ई. में प्रतीक-विद्या अपने अस्तित्व में आने लगी। यह संभव है कि उनके पास उससे पहले भी छवियाँ रही हों, लेकिन हमें नहीं पता। हमेशा चर्च के नेता रहे हैं जो प्रतीकों के इस्तेमाल की आलोचना करते रहे हैं।

वास्तव में कोई प्रमुख आवाज़ नहीं थी। मूर्तिभंजन विवाद, या इसे कभी-कभी आइकन युद्ध कहा जाता है, पूर्वी रूढ़िवादी चर्च में हुआ था। और कभी-कभी हमारे पास कुछ अलग-अलग प्रकरण होते हैं।

हमने पहला प्रतीक, जिसे हम आइकोनक्लाज़्म कहते हैं, 726 और 787 ई. के बीच हुआ। दूसरा आइकोनक्लाज़्म 814 और 842 के बीच हुआ। और एक सिद्धांत यह भी है कि ईसाई इस दिशा में मुसलमानों से प्रभावित हो सकते हैं, जो निश्चित रूप से किसी भी छवि को अस्वीकार करते हैं।

और इसलिए चर्च में ऐसे गुट थे जो चिह्नों के इस्तेमाल के बहुत खिलाफ थे। लेकिन उस मूर्तिभंजन ने निश्चित रूप से ईसाई धर्म पर अपनी छाप छोड़ी, भले ही अंततः मूर्तिभंजन, मूर्तियों के खिलाफ युद्ध, को अस्वीकार कर दिया गया, और रूढ़िवादी चर्च ने उन्हें अपना लिया। मूर्तिभंजकों की भावना और तर्क बाद में प्रोटेस्टेंट द्वारा पुनर्जीवित किए गए और उनके कई विचारों को आकार देना जारी रखा।

इसलिए मूर्तियों के बारे में सोचते समय हमें खुद से यह सवाल पूछने की ज़रूरत है कि क्या यह संभव है कि ईसाई कभी-कभी यह भ्रम पैदा कर सकते हैं, भगवान की छवि को वास्तविक चीज़ के साथ भ्रमित कर सकते हैं? क्या हम अपनी छवियों के प्रति इस हद तक जुनूनी हो सकते हैं कि वे भगवान को छवि की छवि में ढाल सकें, बजाय इसके कि भगवान को हमारे प्रभु की छवि बनाने दें? बेशक, मैं कई अलग-अलग परंपराओं के कई ईसाइयों को जानता हूँ, जिनमें से कई पूजा में प्रतीकों का इस्तेमाल करते हैं। मेरे कुछ सबसे अच्छे दोस्त प्रतीकों का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन फिर भी, मुझे कहना होगा कि वे मुझे परेशान करते हैं, जरूरी नहीं कि इसलिए क्योंकि मेरा मानना है कि वे दूसरे आदेश का उल्लंघन करते हैं, बल्कि इसलिए क्योंकि दूसरे आदेश के पीछे के सिद्धांत, वे सिद्धांत कि भगवान इतने बड़े हैं कि उन्हें ठोस रूप में समाहित नहीं किया जा सकता या ऐसा कुछ।

मेरा मानना है कि यह सिद्धांत आज भी हमारे लिए बहुत प्रासंगिक है। और मुझे चिंता है कि छवियों का उपयोग वास्तव में ईश्वर के बारे में हमारी दृष्टि को सीमित कर सकता है। इसलिए ईश्वर की छवियाँ रखना ठीक है।

जाहिर है, बाइबल हमें ईश्वर की बहुत सी छवियाँ देती है जिनका हम उपयोग कर सकते हैं। समस्या, ज़ाहिर है, तब होती है जब हम उन छवियों को पत्थर की तरह जड़ देते हैं, जब वे हमारे दिमाग में बहुत स्थायी हो जाती हैं, क्योंकि तब हम सीमित हो जाते हैं और हम ईश्वर कौन है, ईश्वर कैसे काम करता है, इस बारे में अपनी समझ में सीमित हो जाते हैं। जब हम उन छवियों को स्थायी होने देते हैं, तो हमेशा यह खतरा बना रहता है कि वे असली भगवान की जगह ले सकती हैं।

एक और तथ्य जिसे हमें ध्यान में रखना चाहिए वह यह है कि बाइबल परमेश्वर की एक छवि की अनुमति देती है, और वास्तव में परमेश्वर की एक छवि का समर्थन करती है। और वह छवि, बेशक, मानव छवि है। परमेश्वर ने मानवता को परमेश्वर की छवि में बनाया है।

बेशक, सदियों से इस कथन के अर्थ पर बहुत बहस होती रही है। मेरी अपनी भावनाएँ, मैं शायद यहाँ बहुत गहराई में नहीं जाऊँगा क्योंकि मैं उन विचारों में पड़ जाऊँगा जो विवादास्पद होंगे और कुछ मिनटों में पर्याप्त रूप से विस्तार से नहीं बता पाऊँगा। इसके बजाय, यह कहना पर्याप्त है कि बाइबल इस बात की पुष्टि करती है कि मनुष्य ईश्वर की छवि है।

इस दुनिया में ईश्वर कैसे प्रकट होता है? ईश्वर इस दुनिया में मानवता के माध्यम से प्रकट होता है। और यीशु, निश्चित रूप से, इसकी पुष्टि करते हैं जब वह अपने अनुयायियों से कहते हैं, तुम कैसे कह सकते हो, मुझे पिता दिखाओ? यदि तुमने मुझे देखा है, तो तुमने पिता को देखा है। यीशु अपने पूर्ण मानव रूप में पूर्ण मानव थे।

वह कहता है, "तुमने पिता को देखा है। उसने परमेश्वर की आत्मा को मूर्त रूप दिया, बेशक, जैसा कोई अन्य मनुष्य नहीं कर सकता। और फिर भी, अगर हम उसकी मानवता को कम आंकने की कोशिश करते हैं और कहते हैं, ठीक है, हम परमेश्वर को उसकी दिव्यता में देखते हैं, उसकी मानवता में नहीं, तो ठीक है, इससे विधर्म की जड़ जम जाती है।

यह मसीह के दिव्य स्वभाव को मानवीय स्वभाव और दिव्य स्वभाव में विभाजित करना है। इसे चर्च ने विधर्म के रूप में खारिज कर दिया है। यह मसीह में एक स्वभाव है।

वह ईश्वरीय, मानव और दिव्य है। और यह उसकी संपूर्णता में ही है कि हम ईश्वर को प्रकट होते हुए देखते हैं। और इसलिए, यीशु हमारे लिए अपने आप में ईश्वर की पूर्णता को दर्शाता है।

और वह, बेशक, अभी भी मौजूद है। यीशु अपने अनुयायियों, अपने शिष्यों से कहते हैं कि हम उनके शरीर हैं। हम मसीह के शरीर हैं, अभी भी दुनिया में मौजूद हैं।

हम भगवान की सबसे अच्छी सेवा किसी छवि के सामने अर्घ चढ़ाकर नहीं करते। बल्कि, हम अपने पड़ोसियों को खाना खिलाकर, नंगे लोगों को कपड़े पहनाकर भगवान की सबसे अच्छी

सेवा करते हैं। भगवान की वह छवि जिसे हमें सबसे अधिक संजोना चाहिए, वह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम अपनी शेल्फ पर रख सकते हैं।

बल्कि, ईश्वर की वह छवि जिसे हमें सबसे अधिक संजोकर रखना चाहिए, वह है वह छवि जो सड़क पर रहने वाले गरीब व्यक्ति या अमीर पड़ोसी, व्यवसायी, अनाथ, वेट्रेस के चेहरे पर दिखती है। ये ईश्वर की वे छवियाँ हैं जिनका हमें सम्मान करना चाहिए। और अपने पड़ोसियों की सेवा करके, हम उस तरह की भावना को अपनाने में मदद कर सकते हैं जो ईश्वर चाहता है कि हम रखें, आराधना की भावना और सेवा की भावना।

के लिए केंद्रबिंदु, केंद्रबिंदु के रूप में काम कर सकते हैं। सबसे बड़ी भक्ति जो हम दिखा सकते हैं, सबसे बढ़िया तरीका जिससे हम ईश्वर की छवि देख सकते हैं, वह है पड़ोसियों में उस छवि को देखना जिन्हें बाइबल में ईश्वर की छवि कहा गया है।

यह डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो और दस आज्ञाओं पर उनकी शिक्षा है।  
यह सत्र 3 है, आज्ञा 2: कोई चित्र नहीं।